4

पुस्तक - हमारी मित्र

जीवन में पत्रों का विशेष महत्त्व है। पत्रों के माध्यम से मानवीय सम्बन्धों में एक ताज़गी, नयापन व जीवन्तता बनी रहती है। पत्र व्यापक संचार का माध्यम भी होते हैं। पत्र-लेखन एक कला है। अतएव पत्र लेखन की कला से छात्र अवगत हो यह आवश्यक है। इसके साथ-साथ एस.एम.एस., ई-मेल और फैक्स के जमाने में भी पत्र-शैली का विकास करना मुख्य उद्देश्य है।

195, उमियानगर सोसायटी,
मुंदरा,
जिला – कच्छ
दिनांक : 4-8-2011

प्रिय मनोज,

नमस्ते।

मैं यहाँ सकुशल हूँ। आशा है वहाँ सभी कुशल से होंगे। पिछले कई दिनों से तुम्हें पत्र लिखने को सोच रहा था, परंतु हमारी पाठशाला में 'वांचे गुजरात' अभियान अंतर्गत कई प्रवृत्तियाँ चल रही थीं, इनमें मैं सम्मिलित हो गया था। मित्र, तुम भी 'वांचे गुजरात' अभियान में सम्मिलित हुए होंगे। अभियान के संदर्भ में राज्य सरकार ने भी एक सूत्र घोषित किया था – 'जो पुस्तक के मित्र, वो मेरे भी मित्र।'

मैं आज तुमको पत्र के माध्यम से 'किताबों का महत्त्व' के बारे में लिख रहा हूँ। किताबें हम सभी की मित्र हैं, वे हमें नया ज्ञान देती हैं एवं भले-बुरे का फर्क बताती हैं। पूज्य गाँधी जी ने कहा था कि, "पुस्तकें मन के लिए साबुन का कार्य करती हैं।" मन में जो अज्ञान है, अंधकार है उसे मिटाकर ज्ञान का संचार करती हैं।

किताबें ज्ञान का स्रोत हैं, जिनसे जिज्ञासा की पूर्ति होती है, इतना ही नहीं ज्ञान और विज्ञान को गतिमान रखती हैं... किताबें मूल्यवान हैं... हमें इनको पढ़कर हमारे जीवन को सजाना एवं सँवारना है। मित्र, मैं ऐसा कहना चाहता हूँ कि मुझे पैसा नहीं पुस्तकें चाहिए। जन्मदिन के अवसर पर पुष्प का गुलदस्ता नहीं, बल्कि किताबों की भेंट देनी चाहिए। पुस्तकें हमारी मित्र हैं और रहेंगी। इनको पढ़कर ज्ञान अर्जन करने की ज़िम्मेदारी हम सब की है। मैंने हररोज अच्छी किताब का एक पन्ना पढ़ना शुरू कर दिया है। मेरी आशा है कि तुम भी ऐसा ही करोगे।

चलो, आज से संकल्प करें कि दोस्तों के जन्मदिन या शुभ अवसरों पर शुभकामना के साथ-साथ किताबों की मूल्यवान भेंट दें।

अब, हमें **'बूके नहीं पर बुक'** चाहिए।

परिवार के सभी बड़ों को मेरा प्रणाम।

तुम्हारा दोस्त,
पूजन

शब्दार्थ

अभियान झुंबेश (गुज.), किसी अच्छे कार्य के लिए प्रवृत्त होना **जिज्ञासा** ज्ञान प्राप्त करने की उत्सुकता **गुलदस्ता** सुंदर फूलों और पत्तियों का बना गुच्छ **संकल्प** दृढ़ निश्चय

अभ्यास

प्रश्न 1. अगर आप किसी को चिट्ठी लिख रहे हैं तो पता किस क्रम में लिखेंगे? नीचे दी गई जगह में लिखिए :

गली / मोहल्ले का नाम, घर का नंबर, राज्य का नाम, खंड का नाम, कस्बे / शहर / गाँव का नाम, पिनकोड़ नंबर

....

....

....

....

आपने इस क्रम में ही क्यों लिखा? चर्चा कीजिए।

प्रश्न 2. प्रारूप के आधार पर मित्र को 'जन्मदिन बधाई' के संदर्भ में पत्र लिखिए :

....
.... भेजनेवाले का पता
....

.... दिनांक
.... संबोधन

कई दिनों से तुम्हारा पत्र नहीं मिला।.. अभिवादन
....
....

....
.... पत्र लिखने का कारण
....
....
....

.... अन्य समाचार
....
....

.... समाप्ति
....
....

.... संबंध
.... नाम

प्रश्न 3. अपने मित्र को चिट्ठी भेजना चाहते हो, तो ठीक से अपनी जगह पर पहुँचे ऐसा पता लिखिए :

प्रश्न 4. चित्र देखिए और जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रश्न पूछिए :

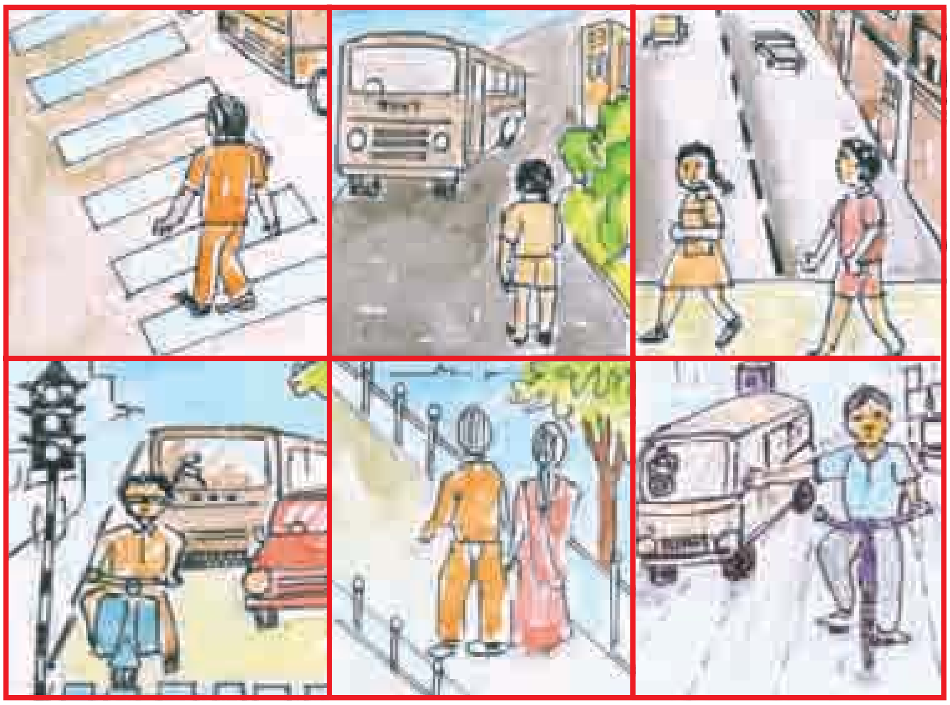

प्रश्न 5. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए :

दुनिया साहसी लोगों के लिए है। कायर हमेशा सोचते रहते हैं और बैठे-बैठे सपना देखा करते हैं, पर साहसी विजयी हो जाते हैं। साहस के बिना योग्यता व्यर्थ है।

आलसी आदमी तो मन के लड्डू ही खाते हैं। मगर जो कर्मवीर हैं, वे सफलता प्राप्त कर लेते हैं। कायर भय के सामने काँपने लगता है। साहसी का लहू भय को देखकर जोश से भर जाता है। साहस के बिना बड़ा डील-डौल किस काम का? दुनिया का इतिहास साहसी पुरुषों और स्त्रियों की कहानियों से भरा पड़ा है।

अब इस गद्यांश के आधार पर अपने साथियों से पूछने के लिए प्रश्न बनाइए।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) पत्र कब और कहाँ से लिखा गया है?

(2) पत्र किसने किसको लिखा है?

(3) पत्र किस विषय के बारे में लिखा गया है?

प्रश्न 2. अपने घर कोई पुराना या नया पत्र ढूँढ़िए और उसे देखकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) पत्र किसने लिखा है?

(2) पत्र क्यों लिखा गया है?

(3) पत्र कौन-से दिनांक को लिखा गया है?

प्रश्न 3. पत्र भेजने के लिए आम तौर पर पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय पत्र या लिफ़ाफ़ा इस्तेमाल किया जाता है। डाकघर जाकर इनका मूल्य पता कीजिए। यह भी पता कीजिए कि इनमें क्या अंतर होता है :

(1) पोस्टकार्ड : ....

(2) अंतर्देशीय पत्र : ....

(3) लिफ़ाफ़ा : ....

प्रश्न 4. अपने आस-पास की किसी भी घटना का वर्णन करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए :

जैसे कि – नदी में बाढ़ आना।

इतना जानिए

- **पेशेवाले लोग :**

कुँजड़ा	– કાછિયો	खटबुना	– ખાટલો ભરનાર
घड़ीसाज़	– ઘડિયાળી	तमोली	– તંબોળી (પાનવાળો)
बज़ाज़	– કાપડિયો	पंसारी	– ગાંધી
जिल्दसाज़	– બુકબાઇન્ડર	हलवाई	– કંદોઈ
खरादी	– સંઘાડિયો	सौदागर	– વેપારી

-

भारतीय डाक
INDIA POST

- **पिनकोड़ नंबर के संदर्भ में** -
  - पिनकोड की शुरुआत 15 अगस्त 1972 को डाक-तार विभाग ने पोस्टल नंबर योजना के नाम से की है।
  - पिन शब्द पोस्टल इंडेक्स नंबर [Postal Index Number] का छोटा रूप है।
  - पिनकोड़ नंबर 6 अंकों का होता है। हर अंक का एक खास स्थानीय अर्थ है।

    उदाहरण के लिए :

    एन.सी.ई.आर.टी.ई. को भेजे गये लिफ़ाफ़े पर लिखा अंक है - 110016 - यहाँ पहले स्थान का अंक यह बताता है कि पिन कोड दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब या जम्मू-कश्मीर का है। अगले दो अंक 10 यह तय करते हैं कि यह दिल्ली (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) के उपक्षेत्र दिल्ली का कोड़ है। अगले तीन अंक 016 दिल्ली उपक्षेत्र के हैं। ऐसे बनता है डाकघर का कोड़। जिससे डाक बाँटने में सुविधा होती है।
  - अब तुम्हारा स्कूल जहाँ पर है; उस इलाके का पिनकोड़ पता कीजिए।

योग्यता विस्तार

- **चिट्ठी का संदेश** -

चिट्ठी में है मन का प्यार,
चिट्ठी है घर का अखबार।
छोटा-सा कागज़ बिन पैर,
करता दुनिया भर की सैर।
नए-नए संदेश सुनाकर,
जोड़ रहा है दिल के तार।

- डाकघर की मुलाकात कीजिए और इसके बारे में आठ-दस वाक्य लिखिए।
- **प्रकल्प कार्य** - डाक टिकिटों का संग्रह कीजिए।
- आकाशवाणी, दूरदर्शन के कार्यक्रमों को सुनकर कार्यक्रम के बारे में प्रतिभाव देने के लिए खत लिखिए।

भाषा-सज्जता

- यह एक उद्यान है।
- बच्चे झूला झूल रहे हैं।
- माली पौधों को पानी दे रहा है।
- कुछ व्यक्ति आपस में बात-चीत कर रहे हैं।
- बच्ची दौड़ रही है।

इन वाक्यों में कहीं कुछ कार्य हो रहा है। जो पद किसी कार्य के करने या होने का बोध करवाए, वह **'क्रिया'** कहलाता है।

'लिखना', 'पढ़ना', 'चलना', 'दौड़ना', 'खाना', 'पीना', 'खेलना', 'देखना' आदि शब्द **'क्रियाएँ'** हैं।

आप जो क्रियाएँ करते हैं, उनकी सूची बनाइए।